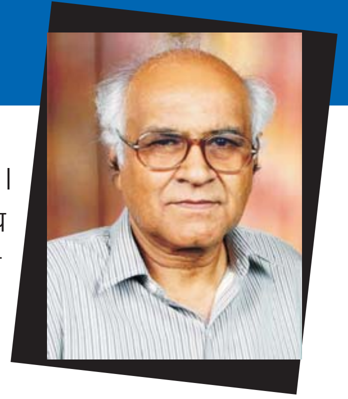
11 मानचित्र और राजनीति

एम.एच. कुरैशी



मनुष्यों ने अपने स्थान का ठीक–ठीक निर्धारण करने के लिए हमेशा ही ऐसे निर्देशांकों की मदद से कोशिश की है जो दरअसल उनके मन की ही उपज होते हैं। जब कोई दिशा भूला हुआ अजनबी किसी अन्य व्यक्ति से स्वयं को सही दिशा में इंगित करने के लिए मदद माँगता है, तो यह मदद कभी–कभी कागज पर लाइनें बनाकर, या फिर जमीन पर दिक्बिन्दुओं/दिशासूचकों की सहायता से प्रदान की जाती है। इस तरह की जानकारी देने के लिए किसी व्यक्ति का प्रशिक्षित मानचित्रकार होना जरूरी नहीं है। इस प्रकार, यह तो माना ही जा सकता है कि मानचित्र हमारे दिमाग में होते हैं भले ही हम उनके प्रति सचेत हों या नहीं। प्रारम्भिक मनुष्य भी अपने क्षितिज के बाहर के स्थानों व लोगों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते थे। अपने क्षितिज के परे क्या है, इस बात ने हमेशा लोगों के मन में उत्सुकता पैदा की है। दूरस्थ स्थानों के बारे में जानकारियाँ कहानियों, यात्रियों के वृत्तांतों, या फिर व्यक्तियों की कल्पनाओं के माध्यम से एक दूसरे तक पहुँचती थीं। वे कहानियाँ जो आमतौर पर इस वाक्य के साथ शुरू होती थीं – ''एक बार, एक राजा था'' आमतौर पर उस काल्पनिक राज्य का विस्तृत वर्णन होती थीं; और पाठकगण हमेशा इसके बारे में एक दिमागी मानचित्र बना लेते थे जो उनके मानस का हिस्सा बन जाता था।

> *यदि हम मानचित्र रचना के ऐतिहासिक उद्भव पर नज़र डालें तो पाते हैं कि मानचित्रकारों ने यथार्थ के बारे में अपनी दृष्टि को निरूपित करने का प्रयास किया। यथार्थ बहुमुखी एवं बहुआयामी होता है; इसलिए इसे दो आयामों में दर्शाना कठिन काम है।*

पृथ्वी के सबसे शुरुआती वर्णन भी ठोस वैज्ञानिक तथ्यों की अपेक्षा दार्शनिक तर्क पर ज्यादा आधारित थे। दार्शनिक अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करके दार्शनिक तर्क बनाते थे और फिर वैज्ञानिक ऐसे तर्कों को सिद्ध करने या खारिज करने का प्रयत्न करते थे। सिद्ध हो जाने पर वह तर्क एक वैज्ञानिक तथ्य बन जाता है। यदि वैज्ञानिक दार्शनिकों के तर्क को खारिज कर देते थे तो दार्शनिक अपने तथ्यों में थोड़ा हेरफेर करके अपने सिद्धान्त को नया रूप देते थे। शुरुआती यूनानी दार्शनिकों का मानना था कि पृथ्वी गोल तो है पर वह एकदम एक गोला न होकर समुद्र के पानी से घिरी गोल टिकिया की तरह है। यह दृष्टि सम्भवतः प्लेटो के समय तक बनी रही जिसने पहली बार यह विचार सामने रखा कि पृथ्वी एक 'गोला' है। उसने अपने विचारों के लिए कभी कोई साक्ष्य नहीं दिया और न अपनी बात को सिद्ध करने का कोई प्रयास किया। उसके तर्क का मूल मानचित्रकला में न होकर धर्मशास्त्र में था। उसका मानना था कि मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। मानव शरीर सममित है, अतः ईश्वर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति के आवास के रूप में पृथ्वी को बनाया होगा जिसे, तार्किक रूप से, सममित आकार का होना चाहिए। चूँकि, गोला एक पूर्ण सममित भौगोलिक स्वरूप है, अतः पृथ्वी को एक गोलाभ होना चाहिए। उसने ब्रह्मांड के बारे में एक भूकेन्द्रिक राय प्रतिपादित की। इसमें उसने पृथ्वी को केन्द्र में रखा और यह माना कि बाकी सभी खगोलीय पिण्ड पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। पृथ्वी को लेकर यह भूकेन्द्रिक विचार लम्बे समय तक मौजूद रहा और धार्मिक संस्थाओं ने अपने धर्मादेशों द्वारा इनका प्रचार–प्रसार किया। प्लेटो ने तो कभी अपने तर्क के लिए साक्ष्य पेश करने की कोशिश नहीं की, लेकिन उसके शिष्य अरस्तू ने इस बारे में साक्ष्य देने का प्रयास किया कि पृथ्वी एक गोला है। और इस तरह गोलाकार पृथ्वी को द्विआयामी मानचित्र में रूपान्तरित करने की समस्या मानचित्रकारों के लिए एक सतत चिन्ता का विषय बन गई।

भूगोलवेत्ताओं और मानचित्रकारों ने मानचित्र को अवधारणाबद्ध करके परिभाषित करने का प्रयास किया। पाठ्यपुस्तकों में, आमतौर पर मानचित्र को ''पृथ्वी का या उसके किसी हिस्से का ऊपर से देखे गए अनुसार एक पैमाने पर आधारित द्विआयामी, पारंपरिक निरूपण'' के रूप में परिभाषित किया जाता है। पृथ्वी का द्विआयामी निरूपण – यह अभिव्यक्ति दर्शाती है कि मानचित्र के अर्थ में अधिकारक्षेत्र की भावना जुड़ी रहती है। अधिकारक्षेत्र ने हमेशा न सिर्फ मनुष्यों को बल्कि पशुओं को भी आकर्षित किया है। जहाँ मनुष्यों ने शुरुआत में जीवित रहने के लिए भूक्षेत्रों का औपनिवेशीकरण किया और अपने सामाजिक–आर्थिक विकास के बाद के चरणों में उसके संसाधनों का शोषण किया, वहीं पशुओं ने जीवित रहने हेतु और कमजोर जानवरों पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अपने क्षेत्र विकसित किए। शेर का क्षेत्र राजाओं के राज्यों से कम महत्वपूर्ण नहीं होता और इसीलिए शेर को जंगल का राजा कहा जाता है। मनुष्य अपने क्षेत्रों का सीमांकन मानचित्र बनाकर करते हैं जबकि पशुओं का अपने क्षेत्रों को चिन्हित करने का ढंग

बड़ा सूक्ष्म होता है। न सिर्फ शेर बल्कि कुत्तों के भी अपने सीमांकित क्षेत्र होते हैं और उनके द्वारा किसी भी अतिक्रमण का बहुत हिंसात्मक ढंग से विरोध किया जाता है। दुनिया भर में कहीं का भी उदाहरण ले लें, कि जब किसी देश की क्षेत्रीय अखण्डता को भंग किया गया है तो उस देश का साहित्य भावात्मक आवेगों से भर जाता है।

यदि हम मानचित्र रचना के ऐतिहासिक उद्भव पर नजर डालें तो पाते हैं कि मानचित्रकारों ने यथार्थ के बारे में अपनी दृष्टि को निरूपित करने का प्रयास किया। यथार्थ बहुमुखी एवं बहुआयामी होता है; इसलिए इसे दो आयामों में दर्शाना कठिन काम है। ईसाई मानचित्रकारों द्वारा बनाए गए बहुत शुरुआती मानचित्रों में से एक में पृथ्वी को टिकिया की तरह गोल दर्शाया गया था जो चारों तरफ से किसी गोलाकर समुद्र के पानी से घिरी हुई थी। भूमध्य सागर को, यूरोप तथा एशिया को अलग करते दिखाया गया था, व टेथिस को, एशिया को यूरोप व अफ्रीका से अलग करते दिखाया गया था। येरूशलम प्रभु ईसा का जन्मस्थान है और चूँकि प्रभु ईसा दुनिया की रोशनी हैं अतः येरूशलम को दुनिया के केन्द्र में दिखाया गया था ताकि रोशनी हर कोने में बराबरी से पहुँचे। पूर्व को मानचित्र में ऊपर और स्वर्ग को पूर्व के अन्तिम कोने में दिखाया गया था। पश्चिम को मानचित्र में नीचे दिखाया गया था। ''ओ'' मानचित्र (जैसा कि उसे कहा जाता था) में यह ''टी'' यथार्थ की अपेक्षा कल्पना पर ज्यादा आधारित था। धीरे–धीरे खुद देखकर अपनी उत्सुकता को शान्त करने के तरीके ने दुनिया के क्षेत्रों की अनुमान पर आधारित समझ की जगह ले ली। इस तरह दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में अन्वेषण शुरू हुए।

खोजकर्ता दूरस्थ देशों के अनजान क्षेत्रों के लिए निकल पड़े। इसके पीछे या तो यथार्थ को जानने की उनकी खुद की उत्सुकता होती थी, अथवा उन्हें विभिन्न देशों के राजाओं और शासकों द्वारा दूरस्थ स्थानों को जाने के लिए और उन जगहों की वास्तविकता को जानने, तथा वहाँ के लोगों और उनकी संस्कृतियों को समझने हेतु प्रायोजित किया जाता था। इस प्रयास में एशियाई लोग सम्भवतः पथ–प्रदर्शक थे। सम्राट अशोक के संरक्षण में भारतीय भगवान बुद्ध का सन्देश लेकर पूर्वी और दक्षिण पूर्वी एशिया के दूरस्थ कोनों तक गए। अरब यात्री सबसे पहले अफ्रीका में भूमध्य रेखा को पार करके दक्षिणी गोलार्ध पहुँचे जो कभी भी यूनानियों द्वारा कल्पित निवास–योग्य दुनिया का हिस्सा नहीं था। यूनानी विद्वानों के अनुसार, अफ्रीका की निवास–योग्य दुनिया अफ्रीका में केवल 12.5 डिग्री उत्तरी अक्षांश तक ही सीमित थी। अरब यात्री, इब्न–ए–हॉकल ने इस सोच को गलत सिद्ध किया जब उसने भूमध्य रेखा के 20 डिग्री दक्षिण में जाकर अफ्रीका के पूर्वी तट के किनारे लोगों को रहते देखा। चीनी यात्रियों ने जमीनी तथा समुद्री मार्गों के माध्यम से विभिन्न भूक्षेत्रों को खोजना शुरू किया। मशहूर चीनी यात्रियों में से एक, ह्वेन साँग तिब्बत के उजाड़ पठार को पार करके भूमार्ग से सातवीं सदी ईसवीं में भारत पहुँचा था। एक अन्य चीनी यात्री इचिंग दक्षिण–पूर्वी एशिया के द्वीपों को पार करके 671 ईसवीं में समुद्री मार्ग से भारत पहुँच सका था। पन्द्रहवीं सदी ईसवीं तक एशियाई यात्रियों ने अपनी समुद्री यात्राएँ बन्द कर दीं थीं। इब्न–ए–बतूता, सम्भवतः, अन्तिम अरब यात्री था। 1433 ईसवीं में अपना अभियान पूरा करने वाला चीनी एडमिरल, चेंग हो, लौटने वाला अन्तिम व्यक्ति था, और उसके साथ चीनी अन्वेषणों की कहानी भी समाप्त हो गई।

पन्द्रहवीं सदी ईसवीं तक प्राचीन दुनिया के बड़े हिस्सों की जानकारी उपलब्ध हो गई थी; इसलिए इस सदी में यूरोपियन यात्रियों ने अन्वेषण के प्रयास किए, खासतौर पर पुर्तगाल और स्पेन के यात्रियों ने जिन्हें इन देशों के राजाओं की आर्थिक मदद और संरक्षण प्राप्त हुए। पुर्तगाली यात्रियों ने इन अन्वेषणों को भूमध्य सागर के परे ले जाने की शुरुआत की। 1415 ई. में राजकुमार हैनरी की जिब्राल्टर के दक्षिण में, अफ्रीका में हुई जीत किसी यूरोपीय शक्ति की यूरोप के बाहर पहली जीत थी। यूरोप द्वारा अफ्रीका, एशिया और बाद में नई दुनिया के औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया सम्भवतः इसी मोड़ पर शुरू हुई थी। राजकुमार हैनरी ने 1418 में, सैगरे में पहला भौगोलिक शोध संस्थान स्थापित किया। इस संस्था को नाविकों को प्रशिक्षित करने का और ऐसे उपकरण तथा मानचित्र बनाने का कार्य सौंपा गया जिनसे आगे के अन्वेषणों में मदद मिल सके। मानचित्र, प्रचुर संसाधनों वाले गन्तव्यों तक पहुँचने के सुरक्षित और सबसे छोटे मार्गों को चिन्हित करने के अत्यावश्यक उपकरण बन गए। मनुष्य हमेशा ही कम से कम प्रयास के सिद्धान्त से प्रेरित हुए हैं, और उन्होंने हमेशा ही सबसे छोटे मार्गों की तलाश की है जिन्हें मर्केटर के प्रक्षेपण पर निर्मित मानचित्रों द्वारा खोज पाना सम्भव हो गया। जहाँ एक ओर सैग्रे में मानचित्र निर्माण का काम जारी था वहीं दूसरी ओर लागोस में राजकुमार हैनरी के निर्देशन में नए जहाज तैयार हो रहे थे। औपनिवेशिक युग के बीज बो दिए गए थे और उनमें से अँकुर निकलना शुरू गए थे। सबसे पहली प्रतिद्वन्दिता स्पेनियाइयों व पुर्तगालियों के मध्य शुरू हुई और बाद में अन्य यूरोपीय शक्तियाँ भी नए उपनिवेशों की खोज की दौड़ में शामिल हो गईं। टॉर्डिसैलास की सन्धि के दस्तावेज पुर्तगालियों व स्पेनियाइयों के बीच के मतभेदों को सुलझाने के लिए पोप द्वारा की गई मध्यस्तता की कहानी कहते हैं। तीन शक्तियाँ; अँग्रेज, फ्रांसीसी और पुर्तगाली भारतीय उपमहाद्वीप पर प्रभुता

स्थापित करने के लिए एक–दूसरे से लड़ते रहे। फ्रांसीसी, डच और अँग्रेज दक्षिणपूर्वी एशिया अर्थात मलेशिया, इण्डोनेशिया और हिन्दचीन के प्रायद्वीप में आमने–सामने थे। औपनिवेशिक प्रक्रिया के विस्तार के साथ नए मानचित्र उभरना शुरू हो गए।

> *राजनैतिक निर्णय नए मानचित्रों के सृजन और मानचित्रों में हेरफेर के लिए जिम्मेदार होते हैं। भारत में अँग्रेजों द्वारा अपनाई गई समकालीन राजनीति के चलते भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन हुआ; यह राजनीति ही पहले भारत, पाकिस्तान, तथा बाद में बांग्लादेश के नए नक्शों के लिए जिम्मेदार थी।*

राजनीति की सृष्टि के रूप में मानचित्र

राजनैतिक निर्णय नए मानचित्रों के सृजन और मानचित्रों में हेरफेर के लिए जिम्मेदार होते हैं। भारत में अँग्रेजों द्वारा अपनाई गई समकालीन राजनीति के चलते भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन हुआ; यह राजनीति ही पहले भारत, पाकिस्तान, तथा बाद में बांग्लादेश के नए नक्शों के लिए जिम्मेदार थी। अँग्रेजों ने तत्कालीन सोवियत संघ और चीन को ब्रिटिश भारत से दूर रखने के लिए उसकी सीमाओं पर कई छोटे–छोटे राज्यों को बफर (अन्त:स्थ) राज्यों की तरह से संरक्षित किया। अंग्रेज नहीं चाहते थे कि वे कभी भी इन पड़ोसियों के साथ किसी झगड़े में उलझें। बफर राज्यों का काम आमतौर पर ऐसी बकरियों की तरह काम करना होता है जो दो शेरों के बीच खड़ी रहकर सुरक्षित रहती हैं। इन देशों का अस्तित्व बने रहने का कारण उनका बफर राज्य होना ही था। द्वितीय विश्वयुद्ध की राजनीति के चलते जर्मनी का विभाजन हुआ, और एक ही राष्ट्र के दो मानचित्र बन गए। चेक और स्लोवाकों को मिलाकर एक देश कर दिया गया जिसका एक मानचित्र था, और सोवियत रूस ने पूरे मध्य एशिया का पृथक अस्तित्व मिटाते हुए सारे अलग–अलग राष्ट्रों को हड़पकर और आपस में मिलाकर एक इकाई बना दिया। अँग्रेजों ने बेलफोर घोषणा के द्वारा एक राजनैतिक निर्णय लेते हुए यहूदियों की मातृभूमि के रूप में इजरायल का सृजन किया। यहूदी प्राचीन अतीत में इजरायल छोड़कर चले गए थे और वहाँ अरबों का निवास हो गया था। उस क्षेत्र में इजरायल के मानचित्र के हकीकत बन जाने के बाद, अरबों ने इसका वर्णन अरब दिल में धँसे एक छुरे के रूप में किया। इस पूरे क्षेत्र में मौजूद सभी देशों के दिलों से बहुत समय से लहू बह रहा है।

औपनिवेशीकरण ने एक नया विश्व मानचित्र तैयार किया। अँग्रेजी साम्राज्य के मानचित्र पर कभी सूर्यास्त नहीं होता था। नई दुनिया में, यूरोपीय शक्तियों के बीच की प्रतिस्पर्धा शुरू से ही प्रचण्ड थी। कनाडा के नक्शे पर फ्राँसीसी प्रभुत्व के क्षेत्र और ब्रिटिश प्रभुत्व के क्षेत्र आसानी से देखे जा सकते हैं। अँग्रेजों ने, सम्भवत: भावनात्मक कारणों की वजह से, अपने देश के स्थानों के नाम संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर पूर्वी राज्यों के मानचित्र पर प्रतिरोपित कर दिए। इंग्लैण्ड, न्यू इंग्लैण्ड के रूप में; हैंपशायर, न्यू हैंपशायर के रूप में; और यॉर्क, न्यूयॉर्क के रूप में अमेरिका में स्थापित हुए। इससे इंग्लैण्ड से आए आप्रवासियों को मानसिक संतोष मिला और निर्मूलता की भावना से पैदा होने वाले संताप भी इससे कम हुए।

राजनैतिक प्रक्रिया में हुए विपरीत परिवर्तन ने नए प्रकार के मानचित्र तैयार किए। उपनिवेशवाद का अन्त होने पर एक नई दुनिया का आविर्भाव हुआ जिसमें स्वतंत्र देशों के नए मानचित्र सामने आए। एशिया और अफ्रीका के मानचित्रों में बदलाव हुआ। अँग्रेजी साम्राज्य ने प्राचीन दुनिया और नई दुनिया, दोनों पर ही अपना नियंत्रण समान रूप से खो दिया। नए स्वतंत्र हुए राज्यों ने अपनी प्राचीन ऐतिहासिक जड़ों और मूल्यों को तलाशना और उनकी पुनर्स्थापना करना प्रारम्भ किया। राष्ट्रीय ध्वजों, राष्ट्रीय गानों और नवरचित मानचित्रों के रूप में नए प्रतीक सामने आए। विश्व मानचित्र को फिर से बनाने और नया आकार देने की प्रक्रिया जो उपनिवेशवाद के पतन के साथ शुरू हुई थी अभी तक थमी नहीं है। 1990 के दशक में दुनिया ने तात्कालिक सोवियत संघ के पतन के साथ ही एक अन्य प्रकार की राजनैतिक खलबली देखी, और एक बार फिर नए मानचित्र सामने आना शुरू हुए। यूरोप व मध्य एशिया में स्थित सोवियत संघ के गणराज्य स्वतंत्र देश बने और उनके पृथक मानचित्र अस्तित्व में आए। इस राजनैतिक प्रक्रम का असर यूरोपीय देशों पर भी पड़ा। दोनों जर्मनी एक हो गए। चेक और स्लोवाकों के बीच मखमली अलगाव हुआ। टीटो के युगोस्लाविया को रक्तरंजित विखण्डन झेलना पड़ा। विविध स्तरों पर हुए राजनैतिक निर्णयों के चलते हर जगह नए मानचित्र उभर कर आए।

मानचित्रों में सीमांकित किसी देश की सीमाएँ उस देश के नागरिकों के लिए बहुत पवित्र होती हैं क्योंकि ये उस राष्ट्र की अखण्डता और सम्प्रभुता का प्रतीक होती हैं और नागरिक उनकी सम्प्रभुता बनाए रखने के लिए अपनी जान भी न्यौछावर कर देते हैं। दुनियाभर में कई लड़ाइयाँ सीमा विवादों की वजह से ही भड़की हैं। राजनैतिक

भूगोलवेत्ता सरहद (बॉर्डर) को क्षेत्र की तरह से और सीमा (बाउन्ड्री) को रेखा की तरह से परिभाषित करते हैं। सीमाएँ भलीभाँति परिभाषित, निर्धारित और अंकित वास्तविकताएँ होती हैं और उनकी बड़े जतन के साथ रक्षा की जाती है। यदि किसी ज्यादा शक्तिशाली पड़ोसी द्वारा कुछ क्षेत्र हड़प लिया जाता है तो भी पराजित देश अपने मानचित्रों में मूल सीमा को ही दर्शाता है और छीन लिए गए क्षेत्र को न बचाया जा सका ज़बरिया अधिग्रहीत क्षेत्र माना जाता है। ये मानचित्र लेखागारों तक सीमित रह जाते हैं और नई पीढ़ियों को यह याद दिलाने के साथ–साथ उकसाते रहते हैं कि उन अधिग्रहीत क्षेत्रों को वापस हासिल करना है।

मनुष्य के चित्त के हिस्सों के रूप में मानचित्र

मानचित्रों को राष्ट्रीय प्रतीकों के रूप में भी देखा जाता है। प्रतीक पहचान देते हैं। राष्ट्रीय प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त होने वाली पहचान मानव चित्त का हिस्सा बन जाती है। इससे मानचित्र रचना में कुछ हेराफेरी भी कर दी जाती है ताकि प्रतीकों (मानचित्र) से जुड़ी भावनाएँ तुष्ट हो सकें। चूँकि द्विआयामी मानचित्र दीवार पर टाँगे जा सकते हैं, इसलिए लोगों ने भ्रमवश यह धारणा बना ली है कि मानचित्र का ऊपरी छोर और, मानचित्र का निचला छोर जैसी चीजें होती हैं। हाँलाकि, पृथ्वी की सतह पर कोई ऊपरी छोर या कोई निचला छोर नहीं है, पर यह मनुष्य की भावनात्मक धारणा होती है, और इसे तब तक नहीं सुधारा जा सकता जब तक कि व्यक्ति मानचित्र के निहितार्थों को नहीं समझ लेता। ओ मानचित्र में टी नाम से जाने जाने वाले शुरुआती मानचित्र का ज़िक्र पहले ही किया जा चुका था। पहले पूर्व को मानचित्र में शीर्ष पर दिखाया जाता था। यूरोपीय मानचित्रकारों ने मानचित्रों को अपने अनुसार ढाल दिया और उत्तर को शीर्ष पर दिखाया गया जिसके कारण मानचित्र में यूरोप दुनिया के शीर्ष पर स्थापित हो गया। मर्केटर प्रक्षेप पर बनने वाले यूरोप के मानचित्र के द्वारा यूरोपीय लोग इस तथ्य के बावजूद, कि मर्केटर प्रक्षेप पर न तो यूरोप का आकार और न ही उसका क्षेत्रफल ही सही था, खुद को आकार में बहुत बड़ा महसूस करने लगे। मर्केटर प्रक्षेप पर तैयार किए गए मानचित्रों में केवल दिशाएँ सही होती हैं। पर लम्बे समय तक, यह यूरोप के मानचित्र के चरित्र को फुलाए रहा। अरब मानचित्रकारों के मन में भी यह विचार आया कि दक्षिण को दुनिया के नक्शे में शीर्ष पर दिखाया जाना चाहिए जिससे अरब क्षेत्र बाकी सभी देशों के ऊपर स्थित दिखाई देते। पर यह विचार आकार नहीं ले सका।

नागरिकों के लिए उनके देश पितृभूमि व मातृभूमि होते हैं। बच्चों और माता–पिता के बीच सबसे नजदीकी रिश्ता होता है। भारतीय लोकाचारों में, इस रिश्ते में भी माता का स्थान पहला होता है जिसे एक शब्द, अर्थात् ''माँ'' से व्यक्त किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि, ''माता पूर्व रूपम्, पिता उत्तर रूपम्, प्रेमो सन्धिः, प्रजनम् संधनम्''। (माँ पहला रूप है, पिता दूसरा, और उनका प्रेम उन्हें मिलाता है तथा बच्चे उन्हें जोड़े रखने वाली सामग्री सदृश होते हैं तथा उन्हें अलग होने से रोके रहते हैं।) हमारे देश के लोगों के मन में भारत के मानचित्र की भारत माता के रूप में छवि बहुत गहरे से बैठी हुई है। कलाकारों ने इस छवि को अपने चित्रों में और कला के अन्य रूपों में दर्शाया है। सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा (उर्दू शायर इकबाल) और सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्, मातरम्, वन्दे मातरम्, (बन्किम चन्द्र चटर्जी द्वारा आनन्दमठ में रचित) में मातृभूमि के प्रति इसी समर्पण भाव को अभिव्यक्त किया गया है। राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना लोगों को एकजुट रखने वाली शक्ति बन जाती है और इससे देश के प्रति अपनत्व के गुणांक को बल मिलता है। भारतीय नागरिक का मन विभाजन को स्वीकार नहीं करता, और हम सभी को ज्ञात इस तथ्य के बावजूद, कि यथार्थ को बदला नहीं जा सकता, वह प्रबल भावनाओं के साथ अखण्ड भारत की बात करता है। अपनी पहचान के प्रतीकों द्वारा पैदा होने वाली भावनाएँ सूक्ष्म स्तरों पर भी देखी जा सकती हैं। भारत में प्रत्येक गाँव का, उसे उस गाँव के ग्राम देवता से मिलने वाली पहचान की वजह से अपने अस्तित्व का एक आधार होता है जो आमतौर पर बड़ी परम्परा की बजाय छोटी परम्परा के लिए होता है। लोग खुद को जगहों के इन नामों के साथ जुड़ा महसूस करते हैं क्योंकि उनकी जड़ें उन जगहों में होती हैं। दक्षिण भारत में, बहुत बार, लोगों के पहले नाम उनके गाँवों के नाम होते हैं। भारत में, लोगों के मानस में गर्व सूक्ष्म, मध्यम और बृहद् स्तरों पर काम करता है। हम अक्सर तमिल गौरव, मराठा गौरव, बंगाली गौरव, गुजराती गौरव आदि की बात करते हैं जिनकी परिणति भारतीय गौरव में होती है। कभी–कभी स्थानीय और क्षेत्रीय गौरव से जुड़ी भावनाएँ इतना प्रचण्ड रूप ले लेती हैं और बहुत ही संकीर्ण और विनाशकारी हो जाती हैं कि उनपर लगाम लगाना पड़ता है। यूरोप में पनपी राष्ट्र–राज्य की अवधारणा ही उसके बाल्कनीकरण (छोटे–छोटे खण्डों में बँटने) के लिए जिम्मेदार थी जिससे कुछ बहुत ही छोटे देशों का जन्म हुआ। इनमें से कुछ देश तो भारत के कुछ जिलों से भी छोटे हैं पर उग्र राष्ट्रवाद की भावना ने उनका अस्तित्व बचाए रखा है। जातीय श्रेष्ठता और गौरव की जर्मन अवधारणा ने ऐसे व्यक्तित्वों को जन्म दिया जिन्होंने पूरी दुनिया को संघर्ष में झोंक दिया और साथ ही साथ खुद का भी नुकसान किया।

चिरकाल से दुनिया के सभी देशों में मानचित्र हमारे अस्तित्व का एक अहम हिस्सा रहे हैं। चाहे हम इनकी कल्पना पृथ्वी के द्विआयामी निरूपण के रूप में करें, या इन्हें एक दिमागी रचना मानें,

निहित स्वार्थों को पूरा करने के लिए तोड़े–मरोड़े गए राजनैतिक उपकरण के रूप में देखें, या फिर एक राष्ट्र–राज्य का प्रतीकात्मक स्वरूप मानें; मानव समाज की बहुपक्षीय वास्तविकता को निरूपित करने के एक अहम उपकरण के रूप में मानचित्रों का अस्तित्व सदा बना रहेगा।

एमएच कुरैशी *सेन्टर फॉर स्टडीज़ इन रीजनल डैवलप्मैंट, जेएनयू के पूर्व प्राध्यापक हैं। उन्हें भारत सहित विदेशों के कई विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में भूगोल पढ़ाने का 45 साल से भी ज्यादा का अनुभव है। वे 6 किताबें लिख चुके हैं। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जरनलों में उनके करीब 45 लेख प्रकाशित हुए हैं। प्रो. कुरैशी भारत के कई राज्यों में विभिन्न शैक्षणिक व सामाजिक संगठनों के बोर्डों के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में वे यूजीसी, नई दिल्ली के लिए सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं। उनसे इस* mhqureshi@mail.jnu.ac.in *ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*

